IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, May 2020 Impact Factor: 4.819

सैद्धान्तिक समीक्षा और आ. रामचन्द्र शुक्ल - 2

डॉ अजय कुमार बिन्द

असि. प्रो. हिंदी

राजकीय महाविद्यालय नानौता, सहारनपुर

drajaybind@gmail.com

यह रसानुभूति कैसे होती है, इस प्रश्न के स्तर में वे 'साधारणीकरण' का सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं- "जब तक किसी भाव का कोई विषय इस रूप में नहीं लाया जाता कि वह सामान्यतः सबके उसी भाव का आलम्बन हो सके, तब तक उसमें रसोदबोधन की पूर्ण शक्ति नहीं आती। इस रूप में लाया जाना हमारे यहाँ 'साधारणीकरण' कहलाता है।"14 काव्य में विषय विशेष ही होता है और उस विषय का सहृदय के मन में आलम्बन विशेष का साधारणीकरण होता है। उन्होंने कहा है कि साधारणीकरण' की अवस्था में भावक देश-काल की सीमा, व्यावहारिक और कार्यकारण सम्बन्ध से परे हो जाते हैं, शुक्लजी ने कहा कि आलम्बन में मनुष्य मात्र के किसी भाव को जाग्रत करने की योग्यता होनी चाहिये। श्रृंगार में पुरुष और स्त्री एक दूसरे के आश्रय व आलम्बन हो सकते है। लेकिन अन्य भावों के विषय में ऐसा सम्भव नहीं है। आ. शुक्ल के अनुसार -"सर्वत्र आश्रय के क्रोध का पात्र मनुष्य मात्र के क्रोध का पात्र हो। रौद्र रस में आलम्बन का 'साधारणीकरण' पूरा तभी हो सकता है, जबकि वह क्रूरता, अन्याय, अत्याचार आदि के कारण मनुष्य मात्र के क्रोध का पात्र बनाया जा सके।"15 आचार्य शुक्ल की यह व्याख्या परम्परागत उनके समाज सापेक्ष्य काव्य चिन्तन का परिचय है। आ.शुक्ल रसानुभूति को अनिवार्यतः आनन्द नहीं मानते हैं। वे मानते हैं कि– "क्रोध, भय, जुगुप्सा तथा करुणा की वास्तविक अनुभूति दुःखात्मक होती है। उनका मत है कि करुण रस प्रधान नाटकों में दुःख का ही अनुभव होता है। हृदय की मुक्त दशा में होने के कारण वह रसात्मक होता है।"16 आ. शुक्ल रस को लौकिक मानते हैं, अलौकिक नहीं। परन्तु उसे हृदय का धर्म मानकर उसे वैयक्तिक अनुभूतियों से ऊपर उठाकर सामाजिक स्वरूप का प्रतिपादन किया है। इसी पर डॉ. रामाधार शर्मा कहते हैं– "शुक्लजी ने रस को अखंड अनुभूति नहीं माना है, उसका विभाजन और वर्गीकरण किया है, उसकी अनिवार्यतः आनन्दात्मकता पर शंका प्रकट की है और उसे अलौकिक के स्थान पर लौकिक सिद्ध किया है।"17

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, May 2020 Impact Factor: 4.819

आ.शुक्ल ने तीन प्रकार के रूप विधान माने हैं– प्रत्यक्ष, स्मृत तथा कल्पित। तीनों में भाव को रसदशा तक पहुँचाने की शक्ति है। इस प्रकार काव्य का पाठक या श्रोता को रस - निष्पत्ति तक पहुँचाने का काम साधारणीकरण को प्रत्यक्ष रूप में स्वीकार किया है। काव्य का आस्वादन करता हुआ भावक प्रत्यक्षतः देश-काल से सम्बद्ध हो जाता है, इस प्रकार काव्य का वास्तविक उद्देश्य समाज, देश का उद्धार करना है। आ. शुक्ल की साधरणीकरण की इस व्याख्या का विरोध उनके सामने ही होने लगा था। नंददुलारे वाजपेयी नें कहा है -"विशुद्ध काव्यात्मक भाव संवेदन की अपेक्षा नैतिक भाव सत्ता की ओर आ.शुक्ल का झुकाव था, यह उनके समीक्षा कर्म से लक्षित होता है। मानस के तीन पात्रों का उदाहरण देकर वे कहते हैं– "राम के चित्रण में श्रोता या पाठक की वृत्ति
रमती है,रसानुभव करती है। रावण के चित्रण में वह रसानुभव नहीं करती और सुग्रीव आदि पात्रों के चित्रण में वह अंशतः रस लेती है तथा शुक्लजी की नैतिक काव्य की दृष्टि की विज्ञापक है।"18 आ शुक्ल ने प्रकृति के स्वतंत्र दर्शन से रस की उत्पत्ति माना है तो इतिहास के रस को 'समृत्याभास कल्पना' का रस कहा है।काव्य के बारे में शुक्लजी ने कहा है– "जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उसे प्रस्तुत वस्तु या मार्मिक भावना में लीन कर दे, वह काव्य है।"19 इसके साथ ही कलावाद या चमत्कारवाद का विरोध करते आ. शुक्ल में काव्य के कलात्मक रूप की उपेक्षा नहीं की है।आ.शुक्ल काव्य को समाज सापेक्ष होकर भी काव्य उपदेश प्रधान नीरस नहीं होना चाहिए। शुक्लजी ने काव्य में बुद्धि तत्त्व की आवश्यकता मानी। वे मानते हैं कि ज्ञान प्रसार से ही हृदय प्रसार है। इसके साथ उन्होंने माना है कि सच्ची कविता वाद मुक्त हुआ करती है। आ.शुक्ल ने रस और जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध बताया है। रस के जीवनगत या सामाजिक आधार का बड़े आग्रहपूर्वक उद्घाटन किया है। सूर और तुलसी की तुलना शुक्लजी ने मुख्यतः इसी आधार पर की है। वे जीवन के पारिवारिक एवं सामाजिक रूपों को साहित्य में व्यक्त देखना चाहते थे। सूर में इनके अभाव की आलोचना की है। सूर, तुलसी का तुलनात्मक प्रस्तुत करते हुए वे कहते हैं -" सूरदास जी अपने भाव में मग्न रहनेवाले थे, अपने चारो ओर की परिस्थिति की आलोचना करने वाले नहीं। संसार में क्या हो रहा है,लोक की प्रवृत्ति क्या है, समाज किस ओर जा रहा है, इन बातों की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया है। तुलसीदास जी लोक की गति के सूक्ष्म पर्यालोचक थे। जिस समय उन्होंने अपने समय की जनता की दुःख, दशा और लोक मर्यादा के ह्रास पर दृष्टिपात किया है उसी प्रकार मर्यादा के ह्रास में सहायता पहुँचाने वाली प्रछन्न शक्तियों को भी पहचाना है।"20

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, May 2020 Impact Factor: 4.819

आ.शुक्ल ने साहित्य के इतिहास को शिक्षित जनता की प्रवृत्तियों के प्रतिबिम्ब के रूप में देखा। वे कहते हैं -"प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।"21 आ.शुक्ल के साहित्य में देश-प्रेम की भावना स्थल-स्थल पर व्यक्त हुई है। उसने शुक्लजी की आलोचना दृष्टि को भी प्रभावित किया है। परन्तु आ.शुक्ल की दृष्टि अधिकतर लोक-पक्ष पर केन्द्रित रही है। देश-प्रेम को आ.शुक्ल ने हृदय का एक संस्कारजन्य भाव माना है। भक्ति - साहित्य के विवेचन में भी आ. शुक्ल आत्मकल्याण और लोककल्याण दोनों को साथ लेकर चले हैं। आ.शुक्ल ने गो. तुलसीदास के काव्य में इस सिद्धांत को प्राप्त किया है। आ.शुक्ल ने भगवान की लोकमंगलकारी विभूति की प्रतिष्ठा की है, उनमें शील, शक्ति और सौन्दर्य का समन्वय दिखलाया है। आ.शुक्ल ने काव्य या रस के अंतिम लक्ष्य आनन्द की अवस्थाओं के आधार पर काव्य के दो भेद किये हैं– आनन्द की साधनावस्था या प्रयत्न पक्ष का काव्य और आनन्द की सिद्धावस्था या उपभोग पक्ष का काव्य। आ.शुक्ल का मत है कि- "आनन्द की साधनावस्था के कवि ही पूर्ण कवि हैं क्यूंकि ये ही जीवन की अनेक परिस्थितियों के भीतर सौंदर्य का साक्षात्कार करते हैं। "22 आ.शुक्ल के सामने देश की तत्कालीन स्थिति विद्यमान थी। गुलामी, पीड़ा की स्थिति में जो देश की रक्षा कर सके वही साहित्य चुने जाने योग्य है। इस प्रकार आ.शुक्ल ने दो भावों को मंगल विधान करने वाला माना है–करुणा व प्रेम। प्रेम मनुष्य के सुख उसके रंजन पक्ष से जुड़ा है तथा करुणा सकी रक्षा पक्ष से। देश की तत्कालीन स्थिति में मनुष्य की रक्षा ही प्रमुख है इसलिए करुणा भाव ही मनुष्यता का भाव है। यह आदमी की रक्षा से जुड़ा भाव है, यह उसके अस्तित्व की रक्षा से जुड़ा है।आ.शुक्ल मानना हैं कि साहित्य का कार्यक्षेत्र मानव हृदय है। वह हृदय के भावों का व्यापार है और इस भावयोग की साधना से मनुष्य का हृदय स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचन मण्डल से ऊपर उठकर लोक सामान्य भावभूमि पर पहुँचता है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार – "हिन्दी आलोचना में शुक्लजी का वही महत्त्व है जो उपन्यासकार प्रेमचन्द या कवि निराला का। शुक्लजी ने बाह्य जगत् व मानव जीवन की वास्तविकता के आधार पर सामन्ती मूल्यों का विरोध किया और देशभक्ति और जनतंत्र की साहित्यिक परम्परा का समर्थन किया।"23

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, May 2020
Impact Factor: 4.819

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

14.आ.शुक्ल, चिन्तामणि, भाग-1, पृ. 227

15.आ. शुक्ल-चिन्तामणि, भाग-2, पृ. 91

16.आ. शुक्ल- चिन्तामणि, भाग-1, पृ. 151, रस मीमांसा

17.डॉ. रामाधार शर्मा-हिन्दी की सैद्धान्तिक समीक्षा- पृ. 97

18.नन्ददुलारे वाजपेयी- आधुनिक साहित्य- पृ. 28219.आ.शुक्ल-चिंतामणि भाग-1, पृ. 171

20.आ.शुक्ल-भ्रमरगीतसार भूमिका, पृ. 47-48

21.आ.शुक्ल- हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.1

22.आ.शुक्ल-चिन्तामणि, भाग-1, पृ. 209

23-रामविलास शर्मा- आ.रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना की भूमिका।